किताब है - शान्तिदायी विचार,

अध्याय है - २,

बिसय है - सर्वदा प्रसन्न रहो

(1)

जो जैसा होता है उसी को अपनी ओर खींचता है। जलराशि समुद्र भूमण्डल की सब नदियों को अपनी ओर खींच लेता है। लड़कों के पास लड़के, बृद्धों के पास बृद्ध और लुटेरों के पास लुटेरे इकट्ठे हो जाते हैं। अतः सर्वदा प्रसन्न रहो, हँसते रहो और आनन्दमय रहो। इसका फल यह होगा कि चारों ओर से संसार का सारा आनन्द और सुख तुम्हारी ओर झुक पड़ेगा या खिंचा और बहता चला आवेगा।

(2)

जैसे को तैसा खींचता है। समान के पास समान जाते हैं। गंजेड़ी के पास गंजेड़ी, भंगेड़ी के पास भंगेड़ी और शराबी के पास गाँव भर के शराबी एकत्र हो जाते हैं। मनुष्य के चरित्र का पता उसकी मित्र मंडली से बहुत कुछ लग सकता है। अतएव यदि हमें सच्चिदानन्द को अपने पास और अपने हृदय में बुलाना है तो हमें स्वयं सच्चिदानन्द बन जाना चाहिए।

(3)

समान में अपने समान वाली वस्तुओं को खींचने की अद्भुत शक्ति होती है। पक्षियों के पास पक्षी, भेड़ियों के पास भेड़िये और हिरनों के पास हिरन आप से आप जुट जाते हैं। अतः यदि ईश्वर को

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

अपने हृदय में बुलाना है तो पहले हृदय में उन्हीं शुभ गुणों को धारण करो जो ईश्वर में वर्तमान हैं। ईश्वर को खींचने के लिए तुम्हें स्वयं ईश्वर बन जाना चाहिए।

(4)

जिसे तुम दुःख कह कर घबड़ाते हो वह दुःख नहीं सुख का पूर्वरुप है। आनन्ददायिनी वृष्टि के पहले आसमान में काले-काले भयंकर बादल प्रकट होते हैं। दूर से देखकर लोग डरते हैं, पर यही बादल जब आनन्ददायिनी वृष्टि करने लगते हैं तो लोग प्रसन्न होते हैं। संसार में जिसे दुःख कहते हैं वह वास्तव में उत्पन्न ही नहीं हुआ। वह तो अपने ही विचारों का भ्रम है। जब निर्विकार सर्वव्यापक है तो रोग और विकार कहाँ रह सकते हैं ? आनन्दमय सच्चिदानन्द यदि सब जगह अणु -अणु में वर्तमान है तो दुःख और कष्ट कहाँ है ? सारे संसार में ईश्वर व्यापक है तो इसका मतलब यह है कि सारे संसार में आनन्द ही आनन्द है, क्योंकि ईश्वर और आनन्द में भेद ही क्या है ? ईश्वर आनन्दमय है और हमारे भीतर वही वर्तमान है, योगी इस वास्तविक ज्ञान को जानकर सर्वदा शान्ति और आनन्द में निमग्न रहता है। जिसको यह वास्तविक ज्ञान हो गया वह जीवनमुक्त है, उसके हृदय में सर्वदा शान्ति रहती है।

(5)

केवल अच्छी परिस्थितियों के कारण कोई सुखी नहीं हो सकता। केवल राजा के घर जन्म लेकर कोई आनन्द और शान्ति का भागी नहीं होता। तमाम राजा और राजकुमार अपने को दुःखी कहते हुए सुने गये हैं। कितने ऐसे भी हैं कि जिन्होंने अपने जीवन से निराश होकर

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

आत्महत्या कर ली है। केवल धनी, बलवान और सुन्दर होने से भी कोई सुखी नही हो सकता। सुखी होता है मनुष्य अपनी आत्मा के सच्चे ज्ञान से, जैसा कि हमारी बनाई हुई पुस्तकों में कहा

(6)

तुम सुख या शान्ति के लिए वृत्त के परिधि की ओर दौड़ते हो, तुम केन्द्र को छोड़ कर संसार में भटकते हो, पर क्या वहाँ शान्ति मिल सकती है ? कदापि नहीं। यदि तुम शान्ति और आनन्द के भूखे हो तो वृत्त, परिधि या संसार को छोड़कर, केन्द्र में - भीतर अपने आप में - मन से सिमिट कर स्थित हो जाओ। यहीं शान्ति, आनन्द और सुख का भण्डार है, यहीं सच्चिदानन्द का निवास है।

(7)

संसार में सबसे बड़ी भूल वह लोग करते हैं जो सच्चिदानन्द आनन्दकन्द ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हुए भी सारे संसार में दुःख और पाप का साम्राज्य मानते हैं। क्या एक ही बिन्दु के एक ही भाग में तथा एक ही समय में प्रकाश और अन्धकार दोनों रह सकते हैं? क्या आध सेर के गिलास में एक ही समय के भीतर आध सेर दूध् और आध सेर शराब् दोनों रह सकते है? क्या ईश्वर ही के भीतर राक्षस भी रह सकता है ? नहीं, कदापि नहीं। यदि ईश्वर या आत्मा सारे संसार में वर्तमान है तो इसका अर्थ यह है कि सारे संसार में आनन्द ही आनन्द है। जो यह मानता है कि सारे संसार में दुःख ही दुःख है वह सुखी नहीं हो सकता। योग की दृष्टि और ब्रह्म ज्ञान के विचार से देखो तो तुम्हें चारों ओर आनन्द ही आनन्द प्रत्यक्ष होगा।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

यदि आनन्द और शान्ति का अनुभव करना है तो ऐसे ही विचार का आश्रय लेना पड़ेगा।

(8)

यदि सारे संसार में ईश्वर या आत्मा व्यापक है तो इसका अर्थ यह है कि सारा संसार पुण्यरुप है और आज से यह कहना छोड़ देना चाहिए कि संसार पापमय है। जो अपनी निष्पाप आत्मा को पापी मानता है, जो संसार को पापमय और दुःखमूल कहता है, उसके हृदय में भी आनन्द और शान्ति नहीं आ सकती।

(9)

संसार में चारों तरफ आनन्द ही आनन्द है और संसार की सारी प्रकृति और नियम हमारी सहायता करने और आज्ञा मानने के लिए तैयार रहते हैं। संसार हमारा मित्र है, शत्रु नहीं। संसार के सब प्रबन्ध और सारे नियम हमारी भलाई के लिए बने हैं। यह सब हमारे लिए हैं, हम उनके लिए नहीं हैं। प्रकृति हमारी दासी और उसके नियम हमारे सेवक हैं। इस सच्चे ज्ञान को धारण करते ही हृदय शान्ति और आनन्द से भर जायगा।

(10)

यदि ईश्वर अखण्ड, अनन्त, पूर्ण और सर्वव्यापक है तो दुःख विपत्ति, कुष्ठ, रोग, दोष और पाप कहाँ है ? जहाँ ईश्वरत्व है वहाँ यह सब कैसे रह सकते हैं ? ईश्वर कहाँ नहीं है ? अतः भीतर बाहर चारों ओर आनन्द ही आनन्द भरा है। हम स्वयं आनन्दकन्द और सच्चिदानन्द हैं।

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.

(11)

रोग, दोष, पाप,और दुःख का अस्तित्व केवल कल्पना के भीतर है। वास्तव में इनका अस्तित्व ईश्वरीय सृष्टि के अन्दर नहीं है। निष्पाप, निष्कलंक निरामय और निर्विकार ईश्वर पाप, दोष, रोग और दुःख को नहीं बना सकता और जिसे ईश्वर ने नहीं बनाया वह बना कैसे, क्योंकि स्रष्टा ईश्वर है। आत्मा ही ईश्वर है, आत्मा अपना आप है, अपना आप दुःख कैसे बनावेगा? ये दुःख और रोग काल्पनिक और असत्य हैं। इन्हें अपने मन से निकाल दो। देखो ! तुम्हारे चारों ओर ईश्वर ही ईश्वर और औनन्द ही आनन्द भरा हुआ है। तुम ईश्वरमय हो, निरामय हो, रोगमय नहीं ।

(12)

तुम, पाप, दोष, रोग, दुःख, शैतान के राज में नहीं, तुम ईश्वर के राज में हो, जिसके राज में पाप, दोष, रोग और दुःख नहीं रह सकता। तुम्हारे ऊपर - नीचे, आगे - पीछे, बाहर - भीतर ईश्वर ही ईश्वर भरा हुआ है। तुम स्वयं ईश्वर हो, तुम स्वयं आनन्दस्वरुप हो ।

--समाप्त--

Copyright © 2019 shivmunisamaj.com. All rights reserved.